

सुखान्त

पतरस बुखारी

दृश्य: एक तंग-व-अँधेरा कमरा जिस में सिवाय एक पुरानी सी मेज़ और थर-थर काँपती कुर्सी के और कोई फ़र्निचर नहीं। फ़र्श पर एक ओर चटाई बिछी है जिसपर अनगिनत पुस्तकों का ढेर लगा है। इस ढेर में से जहाँ तक पुस्तकों की पुश्तें नज़र आती हैं वहाँ शेक्सपियर, टॉलस्टॉय, वड्सवर्थ इत्यादि साहित्य के सुविख्यात नाम दिखाई दे जाते हैं। बाहर कहीं पास ही कुत्ते भौंक रहे हैं। निकट ही एक बरात उतरी हुई है। उसके बेंड की आवाज़ भी सुनाई दे रही है जिसके बजाने वाले क्षय रोग, दमा, खाँसी और इसी प्रकार के अन्य रोगों से पीड़ित प्रतीत होते हैं। ढोल बजाने वाले की सेहत अलबत्ता अच्छी है।

पतरस नामक एक दरिद्र अध्यापक मेज़ पर काम कर रहा है। युवा है लेकिन चेहरे पर पिछली सेहत और सम्पन्नता के आसार केवल कहीं-कहीं बचे हैं। आँखों के गिर्द स्याह हलके पड़े हुए हैं। चेहरे से बुद्धिमत्ता पसीना बनकर टपक रही है।

सामने लटकी हुई एक जंत्री से मालूम होता है कि महीने की अंतिम तिथि है।

बाहर से कोई द्वार खटखटाता है। पतरस उठकर द्वार खोल देता है। तीन विद्यार्थी अत्यंत उत्तम वस्त्र पहने अंदर प्रवेश करते हैं।

पतरस: सज्जनों अन्दर पधारिये। आप देखते हैं कि मेरे पास केवल एक कुर्सी है। लेकिन ठाठ-बाट व पद-प्रतिष्ठा का विचार बहुत तुच्छ विचार है। ज्ञान बड़ा वरदान है। अतः ऐ मेरे पुत्रो! इस ढेर से चंद मोटी पुस्तकें चुन लो और उनको एक दूसरे के ऊपर चुनकर उनपर बैठ जाओ। ज्ञान ही तुम लोगों का ओढ़ना और ज्ञान ही तुम लोगों का बिछौना होना चाहिए।

(कमरे में एक रहस्यमय प्रकाश-सा छा जाता है। फ़रिश्तों के परो की फड़फड़ाहट सुनाई देती है)।

विद्यार्थी: (तीनों मिलकर) ऐ ईश्वर के महान बंदे! ऐ हमारे आदरणीय गुरु, हम तुम्हारी आज्ञा मानने को तैयार हैं। ज्ञान ही हम लोगों का ओढ़ना और ज्ञान ही हम लोगों का बिछौना होना चाहिए।

(पुस्तकों को जोड़कर उनपर बैठ जाते हैं)

पतरस: कहो हे हिन्दुस्तान के सपूतो! आज तुम को कौन-सी ज्ञान-पिपासा मेरे द्वार तक खींचकर ले आयी?

पहला विद्यार्थी: हे सदाचारी पुरुष! हम आज तेरी कृपाओं का बदला उतारने आए हैं।

दूसरा विद्यार्थी: हे देवता! हम तेरे आभारों की भेंट प्रस्तुत करने आए हैं।

तीसरा विद्यार्थी: हे करुणावान इन्सान! हम तेरे परिश्रमों का फल तेरे पास लाए हैं।

पतरस: यह न कहो! यह न कहो! स्वयं मेरा परिश्रम ही मेरे परिश्रम का फल है। कॉलेज के निर्धारित समय के अतिरिक्त जो कुछ मैंने तुम को पढ़ाया उसका पारिश्रमिक मुझे उसी समय वसूल हो गया जब मैंने

तुम्हारी आँखों में बुद्धिमत्ता चमकती देखी। आह तुम क्या जानते हो कि शिक्षण-प्रशिक्षण कैसा दिव्य धंधा है, फिर भी तुम्हारे शब्दों से मेरे हृदय में एक अद्भुत प्रसन्नता सी भर गई है। मुझ पर भरोसा करो और बिल्कुल मत घबराओ। जो कुछ कहना है विस्तारपूर्वक कहो।

पहला विद्यार्थी: (सीधा और हाथ बाँधे हुए खड़ा होकर) हे आदरणीय गुरु! हम ज्ञान की बहुमूल्य संपत्ति से वंचित थे। कक्षा के निर्धारित समय से हमारी प्यास न बुझ सकती थी। पुलिस और सिविल सर्विस की परीक्षाओं की कसौटी कड़ी है। तूने हमारी सहायता की और हमारे अँधेरे मस्तिष्कों में उजाला हो गया। श्रेष्ठ अध्यापक! तू जानता है, आज महीने की अंतिम तिथि है। हम तेरी सेवाओं का तुच्छ मुआवज़ा प्रस्तुत करने आए हैं। तेरे अगाध ज्ञान और तेरे सयाने स्नेह का मूल्य कोई अदा नहीं कर सकता। फिर भी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के रूप में जो तुच्छ राशि हम तेरी सेवा में प्रस्तुत करें उसे स्वीकार कर कि हमारा अनुग्रह इससे कहीं बढ़कर है।

पतरस: तुम्हारे शब्दों से एक विचित्र व्यग्रता मेरे शरीर पर तारी हो गई है।

(पहले विद्यार्थी का संकेत पाकर शेष दो विद्यार्थी भी खड़े हो जाते हैं। बाहर बैंड एकाएक ज़ोर-ज़ोर से बजने लगता है)।

पहला विद्यार्थी (आगे बढ़कर): हे दयावान इंसान! मुझ तुच्छ की भेंट स्वीकार कर। (बड़े आदर व सम्मान के साथ अठनी पेश करता है।)

दूसरा विद्यार्थी (आगे बढ़कर): हे देवता! मेरी भेंट को स्वीकार कर। (अठनी पेश करता है।)

तीसरा विद्यार्थी (आगे बढ़कर): हे सदाचारी पुरुष, मुझ तुच्छ मनुष्य को गौरवान्वित कर। (अठनी पेश करता है।)

पतरस (भावनाओं से बेकाबू होकर भर्राई आवाज़ से): "हे मेरे पुत्रो, ईश्वर की कृपा तुम पर हो। तुम्हारे आज्ञापालन और दायित्व-निर्वहन से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। तुम्हें इस लोक में आराम और परलोक में मुक्ति प्राप्त हो और ईश्वर तुम्हारे सीनों को ज्ञान के प्रकाश से जगमगाता रखे। (तीनों अठनियों उठाकर मेज़ पर रख लेता है।)

विद्यार्थी (तीनों मिलकर): ईश्वर के महान बंदे! हम दायित्यों से मुक्त हो गए। अब हम अनुमति चाहते हैं कि घर पर हमारे मता-पिता हमारे लिए बेचैन होंगे।

पतरस: ईश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम्हारी ज्ञान की तृष्णा और भी बढ़ती रहे।

(विद्यार्थी चले जाते हैं)

पतरस (एकांत में सजदे में गिरकर): ऐ ईश्वर! तेरा लाख-लाख आभार है कि तूने मुझे अपने तुच्छ परिश्रम के फल के लिए बहुत दिनों प्रतीक्षा में न रखा। तेरी कृपा अपार है। लेकिन हमारी दरिद्रता उससे भी कहीं बढ़कर है। यह तेरी ही कृपा है कि तू मेरे माध्यम से औरों को भी आजीविका पहुँचाता है और जो सेवक मेरी सेवा करता है उसका भी संभरक तूने मुझ ही को बना रखा है। तेरी कृपा अपार है और तेरी बख्शिाश हमेशा-हमेशा जारी रहने वाली है।

(कमरे में फिर एक रहस्यमय प्रकाश-सा छा जाता है और फरिश्तों के परो की फड़फड़ाहट सुनाई देती है कुछ देर के बाद पतरस सजदे से सिर उठाता है और सेवक को आवाज़ देता है।)

पतरस: हे ईश्वर के ईमानदार और परिश्रमी प्राणी! तनिक यहाँ तो आइयो।

सेवक (बाहर से): ऐ मेरे सदाचारी स्वामी! मैं खाना पकाकर आऊँगा कि जल्दबाज़ी शैतान का काम है।

(एक लम्बा विराम जिसके दौरान वृक्षों के साए पहले से दुगुने लंबे हो गए हैं)।

पतरस: आह प्रतीक्षा की घड़ियाँ कितनी मीठी हैं। कुत्तों के भौंकने की आवाज़ किस सुन्दरता से बैंड की आवाज़ के साथ मिल रही है।

(सजदे में गिर पड़ता है।)

(फिर उठकर मेज़ के सामने बैठ जाता है। अठन्नियों पर नज़र पड़ती है। उनको तुरंत एक पुस्तक के नीचे छुपा देता है।)

पतरस: आह! मुझे धन-दौलत से घृणा है। ऐ ईश्वर मेरे दिल को दुनिया की लालच से पाक रखियो!

(सेवक अंदर आता है।)

पतरस: ऐ मज़दूर-पेशा इंसान, मुझे तुझपर दया आती है कि ज्ञान की एक किरण भी कभी तेरे सीने में प्रविष्ट न हुई। फिर भी ईश्वर के दरबार में तुम हम सब बराबर हैं। तू जानता है आज महीने की अंतिम तिथि है। तेरे वेतन की अदायगी का समय सिर पर आ गया। प्रसन्न हो कि आज तुझे अपने परिश्रम का पारिश्रमिक मिल जाएगा। ये तीन अठन्नियाँ स्वीकार कर और शेष साढ़े अठारह रूपये के लिए ईश्वर की सहायता की प्रतीक्षा कर। संसार आशा पर टिका है और निराशा पाप है।

(सेवक अठन्नियाँ ज़ोर से ज़मीन पर फेंककर घर से बाहर निकल जाता है। बैंड ज़ोर से बजने लगता है)

पतरस: हे मेरे ईश्वर! अहंकार के पाप से हम सबको बचाए रख और निम्न वर्ग के लोगों का सा घमंड हम से दूर रख!

(फिर काम में व्यस्त हो जाता है।)

रसोईघर से खाना जलने की हल्की-हल्की गंध आ रही है.....

एक लंबा विराम जिसके दौरान में वृक्षों के साए चौगुने लंबे हो गए हैं। बैंड बदस्तूर बज रहा है। एकाएक बाहर सड़क पर मोटरों के आकर रुक जाने की आवाज़ सुनाई देती है।

(थोड़ी देर बाद कोई व्यक्ति द्वार पर दस्तक देता है।)

पतरस (काम पर से सिर उठाकर): ऐ इंसान तू कौन है?

एक आवाज़ (बाहर से) श्रीमान! मैं दासों का दास हूँ और बाहर हाथ बाँधे खड़ा हूँ कि अनुमति हो तो अंदर आऊँ और अपना हाल बयान करूँ।

पतरस: (दिल में) मैं इस आवाज़ से अपरिचित हूँ, लेकिन स्वर से पाया जाता है कि बोलने वाला कोई सभ्य व्यक्ति है। हे ईश्वर यह कौन है? (बुलंद आवाज़ से) अंदर आ जाइए।

(दरवाज़ा खुलता है और एक व्यक्ति बहुमूल्य वस्त्र पहने अंदर प्रवेश करता है। हालाँकि चेहरे से गरिमा टपक रही है लेकिन नज़र ज़मीन पर गड़ी हैं और आदर व सम्मान से हाथ बाँधे खड़ा है।)

पतरस: आप देखते हैं कि मेरे पास केवल एक ही कुर्सी है, लेकिन ठाठ-बाट व शानो-शौकत का विचार बहुत तुच्छ विचार है। ज्ञान बड़ी दौलत है। अतः हे आदरणीय अजनबी! उस ढेर से कुछ मोटी पुस्तकें चुन लो और उनको एक दूसरे के ऊपर चुनकर उन पर बैठ जाओ। ज्ञान ही हम लोगों का ओढ़ना और ज्ञान ही हम लोगों का बिछौना होना चाहिए।

अजनबी: ऐ महान इंसान! मैं तेरे सामने खड़े रहने ही में अपना सौभाग्य समझता हूँ।

पतरस: तुम्हें कौन से ज्ञान की तृष्णा मेरे द्वार तक खींचकर ले आई?

अजनबी: हे महाज्ञानी! हालाँकि तुम मेरी सूरत से परिचित नहीं, लेकिन मैं शिक्षा विभाग का उच्च अधिकारी हूँ और लज्जित हूँ कि मैं आज तक कभी आपकी सेवा में प्रस्तुत न हुआ। मेरी इस कोताही और ग़फलत को अपने ज्ञान व विद्वता के सौजन्य से क्षमा कर दो।

(सजल नयन हो जाता है।)

पतरस: हे ईश्वर क्या यह सब वहम है। क्या मेरी आँखें धोखा खा रही हैं?

अजनबी: मुझे आश्चर्य नहीं कि तुम मेरे आने को वहम समझो क्योंकि आज तक हमने तुम जैसे सदाचारी और महान इंसान से इस क़दर ग़फलत बरती कि मुझे खुद अचम्भा मालूम होता है। लेकिन मुझ पर विश्वास करो। मैं वास्तव में यहाँ तुम्हारी सेवा में खड़ा हूँ और तुम्हारी आँखें तुम्हें हरगिज़ धोखा नहीं दे रही हैं। ऐ सज्जन और दुखी पुरुष विश्वास न हो तो मेरे चुटकी लेकर मेरी परीक्षा कर लो।

(पतरस अजनबी के चुटकी लेता है। अजनबी बहुत ज़ोर से चीखता है।)

पतरस: हाँ मुझे अब कुछ-कुछ विश्वास आ गया, लेकिन श्रीमान आपका यहाँ दिव्य आगमन मेरे लिए इतने गौरव का कारण है कि मुझे डर है कहीं मैं दीवाना न हो जाऊँ।

अजनबी: ऐसे शब्द कहकर मुझे काँटों में न घसीटो और विश्वास करो कि मैं अपनी पिछली भूलों पर बहुत लज्जित हूँ।

पतरस: (अचंभे से) मुझे अब क्या आज्ञा है?

अजनबी: मेरी इतनी मजाल कहाँ कि मैं आपको आज्ञा दूँ। अलबत्ता एक निवेदन है अगर आप स्वीकार कर लें तो मैं स्वयं को संसार का सब से सौभाग्यशाली इंसान समझूँ।

पतरस: आप फ़रमाइए! मैं सुन रहा हूँ। हालाँकि मुझे विश्वास नहीं कि यह जाग्रत अवस्था है। (अजनबी ताली बजाता है। छह सेवक छह बड़े-बड़े संदूक उठाकर अंदर प्रवेश करते हैं और ज़मीन पर रखकर बड़े आदर से झुककर सलाम करके बाहर चले जाते हैं)

अजनबी: (संदूकों के ढकने खोलकर) मैं महाराजा, वेल्ज़ के राजकुमार, भारत के वाइसराय और कमांडर-इन-चीफ़, इन चारों की इच्छा से ये भेंटें आपकी सेवा में आपके ज्ञान व विद्वता की कद्रदानी के तौर पर लेकर उपस्थित हुआ हूँ (भर्राई हुई आवाज़ से) इनको स्वीकार कीजिए और मुझे निराश वापस न भेजिए वरना उन सबका दिल टूट जाएगा।

पतरस: (संदूकों को देखकर) सोना, अशर्कियाँ, जवाहरात! मुझे विश्वास नहीं आता। (आयतल-कुर्सी पढ़ने लगता है)।

अजनबी: इनको स्वीकार कीजिए और मुझे निराश वापस न भेजिए। (आँसू टप-टप गिरते हैं।)

गाना: (आज मोरी अँखियाँ पल न लागें)

पतरस: हे अजनबी! तेरे आँसू क्यों गिर रहे हैं? और तू गा क्यों रहा है? मालूम होता है तुझे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं। यह तेरी दुर्बलता की निशानी है। ईश्वर तुझे शक्ति और साहस दे। मैं प्रसन्न हूँ कि तू और तेरे स्वामी ज्ञान से इतना प्रेम करते हैं। बस अब जा कि हमारे अध्ययन का समय है। कल कॉलेज में अपने लेक्चरों से हमें चार-पाँच सौ आत्माओं को अज्ञानता की नींद से जगाना है।

अजनबी: (सिसकियाँ भरते हुए) मुझे अनुमति हो तो मैं भी उपस्थित होकर आपके विचारों से लाभान्वित हूँ।

पतरस: ईश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम्हारे ज्ञान की प्यास और भी बढ़ती रहे।

(अजनबी विदा हो जाता है। पतरस संदूकों को खोई हुई दृष्टि से देखता रहता है और फिर अचानक हर्ष की एक चीख मारकर गिर पड़ता है और मर जाता है। कमरे में एक रहस्यमय प्रकाश छा जाता है और फ़रिश्तों के परो की फड़फड़ाहट सुनाई देती है। बाहर बैड बदस्तूर बज रहा है।)

अनुवादक : डॉ. आफ़ताब अहमद

व्याख्याता, हिंदी-उर्दू, कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क

¹ आयतल-कुर्सी: कुरान की एक आयत जो संकट की घड़ी में या किसी की मृत्यु के समय परिवार जनों द्वारा पढ़ी जाती है (अनु.)